संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● संयुक्तांक २४-२५ ● १२ एवं १६ जून २०१८ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष षष्ठी संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १६४ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के तत्वावधान में तल्ला रामगढ़ नैनीताल का चतुर्दिवसीय शिविर सम्पन्न हुआ

1. आर्यों में जातिवाद समाप्त हो, हो रोटी बेटी का सम्बन्ध स्थापित – डॉ० धीरज सिंह
2. यज्ञ एवं योग द्वारा ही हमारे जीवन का कल्याण होगा– स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

दिनांक ८ जून से ११ जून २०१८ तक आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान डॉ० धीरज सिंह एवं मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी के सानिध्य में योग शिविर में प्रदेश के सभी जनपदों से आये हुए लगभग २०० आर्यजनों ने भाग लिया।

प्रथम दिवस पर प्रातः ५ बजे योग शिविर प्रारम्भ हुआ और ८ बजे से यज्ञ प्रारम्भ हुआ जिसके यजमान सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी रहे। मधुवन आश्रम में पधारे हुए स्वामी अग्निवेश जी भी अतिथि रूप में कार्यक्रम में शामिल हुए और सभी आर्यजनों का मार्गदर्शन किया स्वामी जी ने अपने आपको किस प्रकार से आर्य समाज में जोड़ा आप एक पौराणिक परिवार से सम्बन्ध रखते थे जहां पर छोटी सी बात के लिए भी शगुन अपशगुन माना जाता था दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा किस प्रकार संघर्ष करते हुए महर्षि देव दयानन्द ने आर्य समाज का प्रचार किया।

कई दिन भूखे रहने के बाद मुरादाबाद के किसी गांव में जाते समय बैंगन मांग कर भूख को शान्त किया। सत्यार्थ प्रकाश की महिमा का वर्णन करते हुए कहा सभी मनुष्यों को सत्यार्थ प्रकाश अपने घरों में रखना चाहिए और स्वाध्याय करना चाहिए स्वामी जी के प्रवचनों ने सभी आर्यजनों को भावविभोर कर दिया। उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री गोविन्द सिंह भण्डारी जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के सभी कार्यों में सहयोग देने को और अपने उद्बोधन में महात्मा नारायण स्वामी आश्रम की शताब्दी समारोह को धूम–धाम से मनाया जाये इसके लिए उ०ख० की ओर से भरपूर सहयोग देने को कहा।

पर्यावरण रक्षा हेतु सभा मंत्री जी एवं सभा प्रधान जी स्वामी जी तथा आये हुए विशिष्ठ अतिथियों के साथ मिलकर वृक्षप्रेमी श्री मालड़ा जी के साथ वृक्षारोपड़ भी किया गया डी०डी० न्यूज ने भी इस कार्यक्रम की शूटिंग की और समाचारों में दिखाने के लिए भी कहा।

द्वितीय दिवस पर– योग संध्या यज्ञ, यज्ञ के यजमान श्री इन्द्र सिंह भदौरिया जी (गाजिबाद) बने स्वामी जी ने धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने योग के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा योग हमारे जीवन का महत्वपूर्ण कार्य है आज के व्यस्त जीवन में लोगों को समय ही नहीं है क्योंकि कार्य इतना अधिक है कि जीवन अस्त–व्यस्त है इसको व्यवस्थित करने के लिए योग करना अति आवश्यक है सभा प्रधान जी ने भी अपने उद्बोधन में यज्ञ और योग से जुड़ने की बात रखी जिस प्रकार दैनिक कार्यों को हम नित्य करते हैं उसी प्रकार दैनिक यज्ञ भी हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण कार्य होना चाहिए। हम हजारों रूपये बरबाद कर देते हैं दवाईयों में यज्ञ हमारे वतावरण को शुद्ध करता है और योग हमें स्वस्थ रखता है। मैं प्रतिदिन यज्ञ करता हूं पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री ज्ञानेन्द्र गांधी जी ने आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं का ओम का पट्टा डालकर उत्साहवर्धन किया।

नैनीताल लोक सभा के पूर्व सांसद महेन्द्र पाल सिंह जी ने महात्मा नारायण स्वामी जी के उ०ख० पर उपकार पर प्रकाश डाला कि जहाँ पर दलित लोगों को समानता दिलाने के लिए आर्य लगाने पर जोर दिया

शेष पृष्ठ ७ पर

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

अफगानिस्तान में चीन के साथ भारत शुरू करेगा साझा परियोजना

अभी हाल में चीन के किंग दाउ शहर में संघाई सहयोग संगठन के मंच से धारा प्रवाह बोलते हुए भारत के यशस्वी प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने आतंकवाद पर कड़ा प्रहार किया। उन्होंने वन बेल्ट वन रोड के बारे में भारतीय सम्प्रभुता और अखण्डता का बखान करते हुए चीन को कड़ी नसीहत देने भी गुरेज नहीं किया। इसके ठीक एक दिन पहले शी जिपनिंग के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बैठक में जिस तरह की समझदारी दिखाई है। वह बताती है कि भारत और चीन के बेहद जटिल माने जाने वाले रिश्ते सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

इस महत्वपूर्ण बैठक में चीन और भारत के बीच हुए समझौता का अपना महत्व है। चाहे वह ब्रह्मपुत्र नदी के हाइड्रो लाजिकल सूचनाओं को साझा करने का फैसला हो या गैर बासमती चावल को चीन को निर्यात करने पर बनी सहमति। बाढ़ की बनी स्थिति के आकलन के लिए ब्रह्मपुत्र नदी से सम्बंधित सूचनाएं पहले साझा की जाती रही है। कालान्तर में दो कलम के बाद चीन ने सूचना साझा करना भारत के साथ बन्द कर दिया था। भारत और चीन के बची अब नये सिरे जो समझौता हुआ है उस समझौते के तहत बाढ़ के दौरान चीन ब्रह्मपुत्र से जुड़ी सूचनाएं भारत सरकार को उपलब्ध करायेगा।

समान्य मौसम में भी अगर ब्रह्मपुत्र नदी के जलस्तर में वृद्धि होती है तो दोनों देश के बीच तय की गयी सीमा से ऊपर पानी जाता है तो इस दशा में भी चीन हमारी सरकार को उपलब्ध करायेगा। भारतीय गैर बासमती चावल के लिए अपना बाजार खोलने पर सहमति जताने का चीन का फैसला भी सकारात्मक कदम है। जो चावल के सबसे बड़े बाजारों में से एक है। उसने सिर्फ एक हमारी मांग मानी है। बासमती चावल का निर्यात पहले से चीन को हो रहा है। इस निर्णय से हमारे व्यापार घाटे की भी थोड़ी बहुत भरपाई होने की सम्भावना जाग उठी है। इसी तरह दोनों देशों में आपस में मिलकर अफगानिस्तान में साझा परियोजना शुरू करने का ताजा तरीन फैसला लिया है।

चीन के इस फैसले को भी हम सकारात्मक दिशा में उठाया गया सही कदम मानते हैं। अफगानिस्तान में भारत की उपस्थिति पाकिस्तान को हमेशा नागवार लगती रही है। लेकिन चीन के साथ आ जाने से अब पाकिस्तान के रवैये में बदलाव आने की उम्मीद है। वैसे भी अफगास्तिान के पुर्ननिर्माण के लिए भारत और चीन के एकजुट होने का विश्व में अलग महत्व है। भारत और चीन की जनता के बीच बेहतर सम्बन्ध विकसित करने की प्रतिबद्धता भी स्वागत योग्य है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की पद चिन्हों पर चलते हुए हमारा देश विश्व पटल पर नीति नई कामयाबी हासिल कर रहा है। आर्य समाजियों के त्याग एवं बलिदान का परिणाम है कि आधुनिकता की इस अंधी दौड़ में भी महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार में वृद्धि हो रही है। देश की राजनैतिक दिशा भी जांति पांति से ऊपर उठकर राष्ट्रीयता की ओर बढ़ रही है।

– सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ षष्ठ समुल्लासारम्भः

अथ राजधर्मान् वक्ष्यामः

हिरण्यभूमिसम्प्राप्त्या पार्थिवो न तथैधते। यथा मित्रं ध्रुवं लब्ध्वा कृशमप्यायतिक्षमम्।।१।। धर्मज्ञं च कृतज्ञं च तुष्टप्रकृतिमेव च। अनुरक्तं स्थिराम्भं लघुमित्रं प्रशस्यते।।२।। प्राज्ञं कुलीनं शूरं च दक्षं दातारमेव च। कृतज्ञं धृतिमन्तञ्च कष्टमाहुररिं बुधाः।।३।। आर्य्यता पुरूषज्ञानं शौर्य्यं करूणवेदिता। स्थौललक्ष्यं च सततमुदासीनगुणोदयः।।४।। मनु०।।

मित्र का लक्षण- यह है- राजा सुवर्ण और भूमि की प्राप्ति से वैसा नहीं बढ़ता कि जैसे निश्चल प्रेमयुक्त भविष्यत् की बातों को सोवने और कार्य सिद्ध करने वाले समर्थ मित्र अथवा दुर्बल मित्र को भी प्राप्त होके बढ़ता है।।१।।

धर्म को जानने और कृतज्ञ अर्थात् किये हुए उपकार को सदा मानने वाले प्रसन्नस्वभाव अनुरागी स्थिराम्भी लघु छोटे भी मित्र को प्राप्त होकर प्रशंसित होता है।।२।।

सदा इस बात को दृढ़ रक्खे कि कभी बुद्धिमान, कुलीन, शूरवीर, चतुर दाता, किये हुए को जानेहारे और धैर्यवान् पुरूष को शत्रु न बनावे क्योंकि जो ऐसे को शत्रु बनावेगा वह दुःख पावेगा।।३।।

उदासीन का लक्षण- जिस में प्रशंसित गुणयुक्त अच्छे बुरे मनुष्यों का ज्ञान, शूरवीरता करूणा भी, स्थूल लक्ष्य अर्थात् ऊपर-ऊपर की बातों को निरन्तर सुनाया करे वह उदासीन कहाता है।।४।।

एवं सर्वमिदं राजा सह सम्मन्त्र्य मन्त्रिभिः। व्यायाम्याप्लुत्य मध्याह्ने भोक्तुमन्तःपुरं विशेत्।।१।।

पूर्वोक्त प्रातःकाल समय उठ शौचादि सन्ध्योपासन अग्निहोत्र कर वा करा सब मन्त्रियों से विचार कर सभा में जा सब भृत्य और सेनाध्यक्षों के साथ मिल, उन को हर्षित कर, नाना प्रकार की व्यूहशिक्षा अर्थात् कवायद कर करा, सब घोड़े, हाथी, गाय आदि स्थान शस्त्र और अस्त्र का कोश तथा वैद्यालय, धन के कोषों को देख सब पर दृष्टि नित्यप्रति देकर जो कुछ उनमें खोट हों उनको निकाल, व्यायामशाल में जा, व्यायाम करके भोजन सुपरीक्षित, बुद्धिबल पराक्रमवर्द्धक, रोगविनाशक, अनेक प्रकार के अन्न व्यञ्जन पान आदि सुगन्धित मिष्टादि अनेक रसयुक्त उत्तम करे कि जिस से सदा सुखी रहै, इस प्रकार सब राज्य के कार्यों की उन्नति किया करो।।१।।

प्रजा से कर लेने का प्रकार-

पञ्चाशद्भाग आदेयो राजा पशुहिरण्ययोः। धान्यानामष्टमो भागः षष्ठो द्वादश एव वा।।मनु०।।

जो व्यापार करने वाले वा शिल्पी को सुवर्ण चांदी का जितना लाभ हो, उसमें से पचासवां भाग, चावल आदि अन्नों में छठा, आठवां वा बारहवां भाग लिया करे, और जो धन लेवे तो भी उस प्रकार लेवे कि जिससे किसान आदि खाने पीने और धन से रहित होकर दुःख न पावें।।१।। क्योंकि प्रजा के धनाढ्य आरोग्य खान पान आदि से सम्मान रहने पर राजा की बड़ी उन्नति होती है। प्रजा को अपने सन्तान के सदृश सुख देवे और प्रजा अपने पिता सदृश राजा और राजपुरूषों को जाने। यह बात ठीक है कि राजाओं के राजा किसान आदि परिश्रम करने वाले हैं और राजा उन का रक्षक है। जो प्रजा न हो तो राजा किस का? और राजा न हो तो प्रजा किसी की कहावे? दोनों अपने-अपने काम में स्वतन्त्र और मिले हुए प्रीतियुक्त काम में परतन्त्र रहैं। प्रजा की साधारण सम्मति के विरूद्ध राजा वा राजपुरूष न हों, राजा की आज्ञा के विरूद्ध पराजपुरूष वा प्रजा न चले, राजा का राजकीय निज काम अर्थात् जिसको 'पोलिटिकल' कहते हैं संक्षेप से कह दिया।

जब जो विशेष देखना चाहै वह चारों वेद, मनुस्मति, शुक्रनीति, महाभारतादि में देखकर निश्चय करे और जो प्रजा का न्याय करना है वह व्यवहार मनुस्मृति के अष्टम और नवमाध्याय आदि की रीति से करना चाहिये। परन्तु यहां भी संक्षेप से लिखते हैं-

प्रत्यहं देशदृष्टैश्च शास्त्रदृष्टैश्च हेतुभिः। अष्टादशसु मार्गेषु निबद्धानि पृथक् पृथक्।।१।। तेषामाद्यमृणादानं निक्षेपोऽस्वामिविक्रयः। सम्भूय च समुत्थानं दत्तस्यानपकर्म च।।२।। वेतनस्यैव चादानं संविदश्च व्यतिक्रमः। क्रयविक्रयानुशयो विवादः स्वामिपालयोः।।३।। सीमाविवादधर्मश्च पारूष्ये दण्डवचचाचिके। स्तेयं च साहसं चैव स्त्रीसङ्ग्रहणमेव च।।४।। स्त्रीपुंधर्मो विभागश्च द्यूतमाह्य एव च। पदान्यष्टादशैतानि व्यवहारस्थितावहि।।५।। एषु स्थानेषु भूयिष्ठं विवादं चरतां नृणाम्। धर्मं शाश्वतमाश्रित्य कुर्यात्कार्यविनिर्णयम्।।६।। धर्मो विद्धस्त्वधर्मेण सभां यत्रोपतिष्ठते। शल्यं चास्य न कृन्तन्ति विद्धास्तत्र सभासदः।।७।। सभा वा न प्रवेष्टव्या वक्तव्यं वा समञ्जसम्। अब्रुवन्विब्रुवन्वापि नरो भवित किल्विषी।।८।। यत्र धर्मो ह्यधर्मेण सत्यं यत्रानृतेन च। हन्यते प्रेक्षमाणानां हतास्तत्र सभासदः।।९।। धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः। तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत्।।१०।। वृषो हि भगवान्धर्मस्तस्य यः कुरूते ह्यलम्। वृषलं तं विदुर्देवास्तस्माद्धर्मं न लोपयेत्।।११।। एक एव सुहृद्धर्मो निधनेऽप्नुयाति यः। शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यद्धि गच्छति।।१२।। पादोऽधर्मस्य कर्त्तारं पादः साक्षिणमृच्छति। पादः सभासदः सर्वान् पादो राजानमृच्छति।।१३।। राजा भवत्यनेनास्तु मुच्यन्ते च सभासदः। एनो गच्छाति कर्त्तारं निन्दार्हो यत्र निन्द्यते।।१४।। मनु०।

सभा राजा और राजपुरूष सब लोग सदाचार और शास्त्रव्यवहार हेतुओं से निम्नलिखित अठारह विवादास्पद मार्गों में विवादयुक्त कर्मों का निर्णय प्रतिदिन किया करें और जो-जो नियम शास्त्रोक्त न पावें और उन के होने की आवश्यकता जानें तो उत्तमोत्तम नियम बांधें कि जिससे राजा और प्रजा की उन्नति हो।।१।।

क्रमशः

धरोहर...

श्रद्धेया मेघादेवी जी आचार्या

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ६८३७४०२१६२

महर्षि पाणिनि के नाम को जीवित करने का एक शुभ संकल्प लिया वेद विदुषी वन्दनीया बहन इस संकल्प को लेकर अपने जीवन की आहुति से आर्य जगत् के इतिहास में नया अध्याय बनाने में सफलता के उच्चशिखर पर जाकर शोभायमान हुई हैं। दोनों बहिनें जिन्हें पूरा आर्य जगत् आज भी श्रद्धा से नमन करता है। व्याकरण की आर्ष परम्परा को प्रतिष्ठत करने वाली बहिन प्रज्ञादेवी जी आचार्या एवं श्रद्धेया बहिन मेघा जी आचार्या प्रज्ञा एवं मेघा दोनों बुद्धि के ही संस्कारित रूप हैं और उसका क्रम भी बुद्धि से सुबुद्धि, सुबुद्धि से मेघा, मेघा से सुमेघा, सुमेधा से प्रज्ञा, प्रज्ञा से ऋतम्भरा का क्रम आता है इसी क्रम में दोनों बहिनों की प्रसिद्धि हुई है। छोटी बहिन मेघादेवी एवं बड़ी बहिन आचार्य प्रज्ञादेवी जी दोनों एक दूसरे की पूरक ही रही हैं। जैसा इधर कन्या गुरूकुल चोटीपुरा में बहिन सुमेघा जी एवं सुकामा जी आचार्या हैं उसी प्रकार गुरूकुल नजीबाबाद में दोनों बहिनें आचार्य प्रियंवदा जी एवं ऋतम्भरा जी हैं।

यह गौरव आर्यजगत् को ही प्राप्त है जो ऐसी विदुषी तपस्विनी ब्रह्मचारिणी रूप में गुरूकुलों के माध्यम से आने वाली पढ़ी को तैयार कर रही है। आर्य परम्परा प्रज्ञा चक्षु गुरूवर स्वामी विरजानन्द दण्डी जी की परम्परा है जो गुरूवर महर्षि दयानन्द जी गुरू दक्षिणा के रूप में प्राप्त हुई। उसी श्रृंखला में पद वाक्य प्रमाणज्ञ व्याकरण के सूर्य श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु एवं पं. युधिष्ठिर जी मिमांसक की परम्परा में अपने जीवन से सैकड़ों जीवन दीप प्रज्जवलित करके गुरूऋण को उतारने का भगीरथ पुरूषार्थ किया है। मेरा परिचय सर्वप्रथम अष्टाध्यायी भाष्य प्रकाशन होने पर हुआ। चर्चाओं में सुनता रहा तथा पत्र–पत्रिकाओं में लेख रूचिपूर्वक पढ़ता रहा एक बार आर्य समाज हापुड़ के वार्षिक सम्मेलन पर बड़ी बहिन जी के दर्शन एवं प्रवचन सुनकर आपकी योग्यता का परिचय प्राप्त किया था फिर १९६८–६९ में मैं सं.मि.वि. वाराणसी विद्यालय कार्य से गया था तब विद्यालय मोतीझील में था वहां मिलकर आया था उस समय प्रियंवदा जी छात्रा थी अष्ठाध्यायी कण्ठस्थ थी आदरणीय वर्मा जी भजनोपदेशक भी वहीं पर तब बहिन मेघा जी से प्रथम परिचय था आपका स्वभाव सरलता योग्यता देखकर मैं प्रभावित हुआ था बहिन जी बड़ी बहिन *प्रज्ञा जी के लिए समर्पित भाव श्रद्धाभाव से कार्य* करती थीं उनका नाम बाद में भी बड़े सम्मान के साथ लिया करती थीं यह सद्गुण ही इन्हें सदैव ऊचाईयों पर ले गया अष्टध्यामी भाष्य प्रथमावृत्ति से आपकी प्रसिद्धि सर्वत्र सभी गुरूकुलों में हुई जो छात्रों एवं आचार्यों के लिए लाभकारी एवं प्रभावकारी सिद्ध हुआ। छात्रों को पहले कापी में लिखना पड़ता था आचार्यों को बोलकर लिखना पड़ता था हमने पूरी प्रथमावृत्ति कापी में लिखी है उस समय यह एक चमत्कार जैसी प्रसन्नता थी कि सिद्धियां भी सरलता से मिल जायेगी।

प्रज्ञा जी आचार्या द्वारा ग्रन्थों का लेखन गोपर्थ परभाष्य एवं नारी चिन्तन वेदों में जो भी उसकी लेखन था और गुरूकुल की कन्याओं को वेद–व्याकरण आदि का पठन–पाठन आचार्या मेघादेवी जी द्वारा ही कराया जाता था। इस क्षेत्र से कई छात्राओं को प्रवेश दिलाया गया। बड़ी बहिन जी बहार उत्सवों एवं यज्ञों में जाती थी तथा बहिन मेघादेवी जी यहीं पर रहकर तपस्या करती रही और अपने जैसी विदुषी कन्यायें समाज के लिए धरोहर तैयार कर दी मुख्य रूप से आज कु० नन्दिता जी, माधुरी जी, सूर्यादेवी जी, धारणा जी प्रियंवदाजी, ऋतम्भरा जी, आदि–आदि नाम आर्यजगत् में प्रसिद्धि को प्राप्त हुए हैं। यह कार्य अधिक कठिन एवं स्तुत्य है। बहिन मेघादेवी जी नम्रता–सुशीलता व्यक्तित्व की धनी थी बड़ी बहिन जी के प्रति समर्पण भाव था किसी भी प्रकार का मनोमालिन्य मुझे प्रतीत नहीं हुआ।

उनका आदेश वे गुरू तथा प्रभु आदेशवत् मानकर कार्यकरती रहीं। पूरी रामायण में जैसे राम के प्रश्चात् भरत को सम्मन मिला है तथा जो समर्पण भरत का राम के प्रति रहा वही समर्पण बहिन मेघादेवी जी का बहिन प्रज्ञा देवी जी के विषय में आजीवन रहा। उनके प्रति उनके चेहरे पर किसी प्रकार का आवेश अथवा विद्वेष देखने में नहीं आया। मोतीझील के बाद तुलसीपुर बजरडीहा गुरूकुल की अपनी भूमि में निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ तभी से मैं जब कभी वाराणसी गया प्रायः फोन करके बहिन प्रज्ञा जी का पता करके उनके दर्शनार्थ जाता रहा। हाँ उनके निधन के पश्चात बहिन बहिन मेघादेवी जी के कई पत्र आने के बाद भी मैं उनके किसी कार्यक्रम में अथवा दर्शनार्थ नहीं जा सका।

आर्य समाज लल्लापुरा अथवा जिलासभा द्वारा आयोजित महर्षि दयानन्द शास्त्रार्थ स्थल दुर्गाकुण्ड वाराणसी के कार्यक्रमों पर ही दर्शन लाभ प्राप्त करता रहा। कभी फोन पर कुशलता की वार्ता हो जाती थी। मुझे उन्हें कर्मयोगिनी कहने में किंचित भी संकोच नहीं है वे तो अपने उस दिव्य पथ पर अनुसरण कर रही थी जिस पथ पर चलने को उत्तरदायित्व गुरूवर जिज्ञासु जी ने दिया था। उनके पढ़ाने का सरल तरीका सहजरूप में गहन विषय को भी हृदयंगम कर लेता था अपनी स्नातिकाओं ने आपका गौरव बढ़ाया है तथा आपकी विद्या को सुरक्षित रखते हुए आपने वाली पीढ़ी को विदुषी बनाने क संकल्प भी लिया है। माता–पिता, गुरूजनों के ऋण को उतारने का पुरूषार्थ भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा प्रद है। गुरूकुल परिवार एक वृहद् परिवार होता है जहां वेद–वेदांगों के ज्ञान द्वारा विदुशी तैयार करने का कार्य राष्ट्रयज्ञ एवं वेद रक्षा यज्ञ का कार्यक्रम है इस राष्ट्र रक्षा अभियान में बहिन जी ने अपनी आहुति लगाकर शंकाराचार्या द्वारा "स्त्री शूद्रौ नाधीयताम्" को करारा उत्तर दिया है (इस वाक्य पर करारा थप्पड़ है) स्वामी करपात्री जी ने भी एक सभा में भाषण के अन्तर्गत कहा कि स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार नही हैं ये पैर की जूती की तरह निन्दनीय है तभी सभा में खड़ी होकर बड़ी बहिन जी ने शास्त्रार्थ के लिए खुली चुनौती दी थी और उनकी बोलती बन्द करके आर्यवीरांगना का परिचय दिया था। इस गर्जना से बहिनजी का आर्य जगत् में बड़ा सम्मान हुआ था तथा सर्वत्र चर्चा प्रशंसा कई वर्षों तक सुनी जाती रही। ऐसी विदुषी बहिन पर हमें गर्व है। मुझे स्मरण है आर्य जगत् में कहीं भी कोई सम्मेलन हो जयन्ती हो, उत्सव हो, वेदपारायण यज्ञ हो वेद प्रचार सप्ताह हो या सम्मेलन में आपको बुलाना पूरा आर्य जगत् अपना सौभाग्य मानता था, और बहिन जी वहां जाकर अपनी योग्यता से लोगों को प्रभावित करती थी तो उनके पीछे गुरूकुल का गुरूतरभार और बहिन मेघादेवी जी सम्भलकर उन्हें इस चिन्ता से मुक्त रखती थीं इसी आधार पर देश के कोने–कोने में जो वेद प्रचार हुआ है उसके सूत्र में श्रेय बहिन मेघा देवी जी को ही जाता है आज पूरे देश में बहिन सूर्या देवी जी, बहिन नन्दिता जी अथवा बहिन धारण जी कहीं जाती हैं तो भी उसका श्रेय बहिन मेघा देवी जी को ही जा रहा है क्योंकि आचार्य इति प्रश्न रूपम्–शिष्य इति उत्तर रूपम् इस आधार पर उनकी योग्यता का आधार बहिन जी ही हैं ब्रह्मचारियों को प्रातः जागरण से लेकर रात्रि में सोने तक की दिनचर्या में वेदपाठ प्रशिक्षण, व्याकरण साहित्य, संगीत आदि कलाओं के प्रशिक्षण के साथ–साथ व्यवहारिक कुशलता हेतु घर–परिवार–समाज की व्यवस्था को समझना और सीखना तथा भाषण कला का प्रशिक्षण देकर भावी पीढ़ी का निर्माण कर राष्ट्र निर्माण का कार्य किया है। रसोई गौशाला निर्माण कार्य पारिणनीय मन्दिर, अतिथि सम्मान–कार्यालयीय व्यवस्था सभी का विधिवत् निरीक्षण एवं अनुपालन मनोयोग से करती रहीं। वाराणसी सांस्कृतिक नगरी है। देशी विदेशी पर्यटक आते हैं गुरूकुल में भी आकर परिचय प्राप्त करते हैं उसके लिए भी समय निकालती थीं सं.सं.विवि. वाराणसी में कोई उच्चस्तरीय कार्यक्रम हो अथवा आर्य सम्मेलन हो गुरूकुल की छात्राओं को ससम्मान आमिन्त्रत किया जाता है। गुरूकुल सम्मेलन पर तो कार्यक्रम अत्यन्त प्रशंसनीय होता है अपनी तैयारी अपना वातावरण अपना परिवार सब कुछ आत्मीयता से प्रसन्न्ता बढ़ाता है इस समय आचार्या नन्दिता जी ही सारा कार्य सम्भाल रही हैं उन्हीं पर उनका कार्यभार है। गतवर्ष हरियाणा में " मानव सेवा प्रतिष्ठान" के माध्यम से भाई रामपाल जी शास्त्री ने उन्हें सम्मानित किया था मैं भी उसका साक्षी हूं बहिन सुमेघा जी भी उपस्थित थीं बहिन मेघा देवी जी इतनी जल्दी चली जायेगी इसका आभास किसी को भी नहीं था मैं जब भी उनके पत्र आते क्षमा याचना ही करता रहा और उनके दर्शन न करने का मुझे दुःख है ।

हमारे बिछुड़े भाई

• गंगा प्रसाद उपाध्याय

यह भली-भांति सिद्ध हो चुका है कि जमाने में दुनियां भर में हिन्दू (आर्य) जाति रहती थी और वेद को मानती थी, परन्तु आज हिन्दूस्तान में भी एक तिहाई से अधिक लोग वैदिक-धर्म त्याग बैठे हैं, और चोटी जनेऊ रखने वाले तथा गौ रक्षा करने वालों की संख्या दिन-प्रतिदिन कम हो रही है। इसके मुख्य कारण दो हैं पहला तो यह है कि हिन्दुओं ने अपने वैदिक धर्म का उपदेश दूसरों को करना छोड़ दिया। दूसरा जब कभी कोई जबरदस्ती मुसलमान या ईसाई बना लिया गया और उसने अपने धर्म में आने के लिए इच्छा प्रकट की तो उसी के भाइयों ने उसे यह कह कर दुत्कार दिया कि अब तुम सदा के लिए गिर गये, हिन्दू धर्म में वापिस नहीं आ सकते। जब तक दूसरे धर्म वालों को यह पता लगा कि हिन्दू धर्म ऐसा कच्चा धागा है कि फूंक मारते ही टूट जाता है तो उन्हें हिन्दुओं को अपने धर्म में मिलाने में बड़ी आसानी हो गई। अगर किसी भूले भटके को जबरदस्ती खाना खिला दिया या मुंह में थूक दिया तो उस बेचारे को मुसलमान बनना ही पड़ा। यदि किसी स्त्री का किसी ने सतीत्व भंग कर दिया तो उसके घर वालों ने उनको उनके गिाड़ने वालों के सुपुर्द कर दिया। अब तो दूसरे धर्म वालों की चढ़ बनी। बिना परिश्रम के ही उनके धर्म वालों की संख्या बढ़ने और हिन्दुओं की संख्या घटने लगी। मुसलमानी राज्य के समय लाखों ऐसे हिन्दू थे जो बलात् मुसलमान बना लिए गये। इनको मुसलमानी धर्म तो पसन्द न था, परन्तु हिन्दु उनको अपने में रहने नहीं देते थे। इसलिये उन बेचारों में से बहुत से तो मुसलमान हो ही गये। परन्तु लाखों ऐसे राजपूत भी थे जिनको हिन्दुओं मं वापिस आने की बड़ी लालसा थी। मुसलमानी धर्म तथा संस्कारों को ग्रहण करने में उनको ग्लानि होती थी। उनके बाप दादों ने गौ को माता कहकर पुकारा था। मुसलमानी धर्म में रहकर वह गाय की कुर्बानी नहीं कर सके। उनके बाप दादों ने चोटी रखी। इसलिये चोटी कटाने में उनका जी दुखता था। मुसलमानी धर्म में चचेरे भाई बहिन का विवाह धर्मानुसार समझा जाता था। हिन्दुओं में एक गोत्र में विवाह महापाप समझते थे। मुसलमानों में जिस लोटे में पाखाना जाते थे उसे बिना मिट्टी से साफ किये पानी पी सकते थे। हिन्दुओं को इन बातों से सैकड़ो पीढ़ियों से घृणा थी। ऐसी दशा में इन लोगों की बड़ी मुश्किल थी। एक ओर उनकी रूचि मुसलमानी धर्म में न थी। दूसरी ओर उनके हिन्दू रिश्तेदार उनको अपने में मिलाने के लिए राजी न थे। अब उन्होंने एक उपाय सोचा। वे मुसलमान तो न हुये परन्तु उन्होंने अपने को 'नौ मुस्लिम' (नये मुसलमान) या अधवरिया कहना शुरू किया। उन्होंने अपने रस्म रिवाज हिन्दुओं के से ही रखे। वे राम-राम कहते, हिन्दुओं की भांति करते, अपने नाम हिन्दुओं की तरह 'सिंह' पर रखते, परन्तु विवाह में कभी-कभी मुसलमान मौलवी को भी बुला लेते थे। मौलवी को कभी-कभी बुला लेने से उस समय के राज कर्मचारी उनको मुसलमान समझकर समझते थे कि अब ये हिन्दू धर्म में जा ही नहीं सकते। समय पाकर इनको मुसलमान ही होना पड़ेगा। इस प्रकार लाखों राजपूतों ने जिनको मलकाना कहा जाता है अपनी एक अलग जाति बनाकर कई सौ वर्ष इस मुश्किल के साथ गुजार दिये जैसे दांतों के बीच में जीभ होती है। इधर इनको मुसलमानी धर्म से ग्लानि, उधर हिन्दुओं को उनसे घृणा। करते तो क्या करते। ऐसे नौ मुस्लिम आगरा, एटा, इटावा, मथुरा, फर्रूखाबाद गिरगांव, दिल्ली, भरतपुर आदि प्रान्तों में लाखों हैं। कई हिसाब लगाने वालों ने तो इनकी संख्या 27 लाख तक लिखी है। आगरा जिले के सरकारी गजेटियर में लिखा है ''धर्म परिर्तन किये हुये हिन्दुओं के अनेकों वंशज इस जिले में सर्वत्र पाये जाते हैं पर कारोली तालुके के छः गांवों में इनक विशेष बस्ती हैं। इसके बाद मथुरा, फर्रूखाबाद गिरगांव, दिल्ली, भरतपुर आदि प्रान्तों में लाखों हैं। कई हिसाब लगाने वालों ने इनकी संख्या 27 लाख तक लिखी है। आगरा जिले के सरकारी गजेटियर में लिखा है ''धर्म परिवर्तन किये हुए हिन्दुओं के अनेकों वंशज इस जिले में इनकी विशेष बस्ती हैं। इसके बाद मथुरा, एटा और मैनपुरी जिलों में भी इनकी खासी बस्ती हैं। ये मलकाना कहे जाते हैं। ये धर्म परिवर्तन किये हुए राजपूतों की श्रेणी में रखे जाते हैं? भिन्न-भिन्न स्थानों में वे अपनी भिन्न-भिन्न उत्पत्ति बतलाते हैं, पर इसमें सन्देह नहीं कि उनके पूर्व पुरूष उच्चवंश सम्भूत राजपूत जमींदार थें। यद्यपि दुख के साथ वे अपने को मुसलमान कहते हैं, पर पूछने पर अपनी पहली जाति ही बतलाते हैं और मलकाना के नाम से पुकारा जाना नहीं चाहते। उनके नाम हिन्दुओं के से होते हैं। वे हिन्दू मन्दिरों में पूजा करते हैं और उनके आपस के शिष्टाचार का शब्द ''राम-राम'' हैं। वे शिखा रखते हैं और अपनी ही जाति में ब्याह करते हैं और मियां ठाकुर कहलाना चाहते हैं।'' इससे सिद्ध है कि मलकाने राजपूत हिन्दू ही हैं। बहुत से मुसलमान लोग इनको पक्का मुलमान बनाने के लिए इनमें पहुंचे और तहकीकात करके जो रिपोर्ट मुसलमानी अखबारों में दी उनसे भी यही सिद्ध होता है।

कु0 मुहम्मद अशरफ साहब, बी.ए. (अलीगढ़) सहयोगी जमींदार लिखते हैं ''मुस्लिम राजपूतों की बसावट जिला आगरा और मथुरा के निकट पांच छः लाख के लगभग हैं... साधारणतया नाम 'सिंह' और 'नारायण' पर होते हैं। रीति रिवाज में सब हिन्दू हैं इनमें कोई मुसलमानीपन नहीं। गौरी, खिलजी या औरंगजेब के समय में इनके पूर्वज मुसलमान हुए थे .. ये ग्राम 25 के लगभग हैं।''

मुस्तफा रजा सदर बफर इस्लाम बरेली आगरा से 'वकील' अखबार' अमृतसर को लिखते हैं उनके नाम हिन्दुओं के से हैं, सिर पर चोटी रखते हैं। न अपना बर्तन किसी को देते हैं, न दूसरों का स्वयम् व्यवहार करते हैं।

ऐसे लोगों की उनके हिन्दू भाईयों ने बहुत दिनों तक परवाह न की और हिन्दुओं की दिन-प्रतिदिन कमी ही होती रही। परन्तु जब आर्यसमाज ने और विशेषकर आर्यसमाज के उपदेशक शिरोमणि श्री धर्मवीर, पं0 लेखराम ने अन्य धर्मावलम्बियों की शुद्धि करके वैदिक धर्म में मिलना आरम्भ किया और सैकड़ों चोटी-विहीन शिरों पर चोटी रखाकर वैदिक धर्म का अमृतपान उनको कराया, उस समय से मलकाना राजपूत भी फिर अपनी पुरानी बिरादरी में में लौटने के स्वप्न देखने लगे और उनकी लालस दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही गई। वह केवल यह चाहते थे कि उनके पुराने रिश्तेदार राजपूत उनको अपने में मिला लें। यह मामला बहुत दिनों तक क्षत्रियों के सम्मुख उपस्थित रहा, परन्तु 30 अगस्त 1922 ई0 को क्षत्रिय उपकारिणी महासभा की प्रतिनिधि सभा की बैठक बनारस में हुई। अध्यक्ष का आसन माननीय राजा सर रामपाल सिंह साहब के.सी.आई., मेम्बर स्टेट कॉसिल तालुकेदारान सभा अवध ने ग्रहण किया। उसमें इस आशय का प्रस्ताव किया गया कि जो राजपूत शाही समय में बलात् मुसलमान बनाये गये थे, परन्तु उनके वंशज अब फिर अपने धर्म और बिरादरी में वापिस आना चाहते हैं, उनको शुद्ध करके बरादरी में मिला लिया जाये। फिर 29 दिसम्बर 1922 को क्षत्रिय प्रतिनिधि सभा की बैठक आगरा में लेफ्टिनेण्ट राजा दुर्गानारायणसिंह जी तिरवा (फर्रूखाबाद) नरेश के सभापतित्व में हुई और उस समय क्षत्रिय जनता की सम्पति जानकर मलकाने राजपूतों को बिरादरी में मिला लेने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। इसके बाद क्षत्रिय महासभा का 26 वाँ वार्षिकोत्सव 31 दिसम्बर को आगरा में श्रीमन् राजाधिराज सर नाहर सिंह जी के.सी.आई.ई. शाहपुराधीश की अध्यक्षता में हुआ। उसमें उपर्युक्त प्रस्ताव होने पर सर्व सम्मति से स्वीकृत किया गया। इसे स्वीकृति की ही देर थी। स्वीकृति पाते ही मलकाना राजपूतों को शुद्ध करना प्रारम्भ हो गया।

इच्छा तो दोनों ओर थी ही, केवल संस्कार की कसर थी। सो शुद्धि-सभा ने पूरी कर दी। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी दिल्ली, महात्मा हंसराज जी लाहौर से तथा कई सनातनधर्मी जैनी तथा अन्य महाशयों ने मिलकर कार्य करना आरम्भ किया। हवन किये गये, जनेऊ दिये गये, और मलकाना राजपूतों को फिर अपनी बिरादरी में मिला लिया गया। समस्त हिन्दू जाति में इस शुद्धि से कितनी जागृति हुई है, उसके समाचार पत्रों में छपते ही रहते हैं। हम यहां केवल ''अभ्युदय'' से कुछ उद्धत करते हैं-

''अब आशा प्रबल होती है कि हिन्दू जाति फिर एक बार शक्तिशाली होगी। हिन्दू भाइयों ने हिन्दू-धर्म और हिन्दू-जाति की लाज रख ली। जो साढ़े चार लाख राजपूत किसी समय में दबाव से या अपनी कमजोरी से मुसलमान हो गये थे, उनको शुद्ध कर गर्भ में ले लेने का हिन्दू जाति जोरों से प्रयत्न कर रही है। वास्तव में जीती जागती जाति का यह एक ज्वलन्त प्रमाण है कि यह गैरों को अपना ले और अपना सा बना ले। हिन्दू जाति का इतिहास यदि देखा जाये तो यह छिपा नहीं है कि कितने अवसरों पर इसने दूसरों अपने गर्भ में ले लिया था। इसके विपरीत इतिहास की यह भी घोषणा है कि जिस दिन से हिन्दू जाति ने अपनी संख्या में इस तरह की वृद्धि का ख्याल छोड़ा, उसी दिन से उन्नति के मार्ग की ओर उसकी पीठ हो गई। आज हिन्दू जाति को फिर अभिमान करने का अवसर प्राप्त है, क्योंकि हमारा दृढ़ विश्वास है कि इन साढ़े चार लाख बिछुडे हुए भाइयों के मिलने साथ ही ऐसे ही अन्य भाइयों के भी मिलने से हमारा सौभाग्य-सूर्य शीघ्र ही गगन मंडल में चमकता हुआ दिखाई देगा। हम हिन्दू जाति को इस अवसर पर बधाई देते हैं।''

बहुत से लोग समझते हैं कि इसमें केवल आर्यसमाजी काम करता है, परन्तु यह कहना भूल और भ्रम है। शुद्धि की स्वीकृति सभी सभाओं में दी हुई है। कुछ सभाओं के नाम यहां दिये जाते हैं- सनातन धर्मी सर्वप्रधान संस्था भारत धर्म महामण्डल ने मलकाना राजपूतों की शुद्धि को पास कर दिया है। जिस अधिवेशन में यह प्रस्ताव पास हुआ, उसके सभापति श्री दरभंगा नरेश स्वयं थे। कबीरमठ और शारदा पीठ के जगद्गुरू शंकराचार्य जी पहले ही शुद्धि की व्यवस्था दे चुके हैं। महाराष्ट्र परिषद्, साधुमहासभा, गुर्जर महासभा, जाट महासभा, राजपूत क्षत्रिय महासभा ने भी हर्षपूर्वक शुद्धि को अपनाने का निश्चय किया है। अमृतसर, लाहौर, लायलपुर आदि शहरों से सनातनी पण्डित लिखित व्यवस्था दे चुके हैं। सनातन धर्म की प्रसिद्ध वक्ता श्री पण्डित दीनदयालु शर्मा आगरा में पधारे और शुद्धि के कार्य को न केवल पसन्द किया, किन्तु उसमें भाग लेने का विचार-निश्चय किया था।

शुद्धि के कार्य में वह कौन सा गुण है, जिसने आज भारतवर्ष की हिन्दू जाति को आकर्षित कर रखा है? वस्तुतः अपने सजातीय लोगों को अपने में मिलाने से सभी जीती जागती जातियां खुश होती हैं।

शेष पृष्ठ ५ पर

पृष्ठ ४ का शेष

हमारे बिछुड़े...

मनुष्य का स्वभाव है कि वह अपने दूसरे भाई से मिलकर खुश हो। केवल कुत्ता ही ऐसा प्राणी है, जो दूसरे कुत्ते को देखकर भौंकता है। इसलिए यदि हिन्दू लोग अपने बिछुडे भाइयों को मिलाने से प्रसन्न होते हैं, तो उसमें आश्चर्य ही क्या? आश्चर्य इस बात का है कि हिन्दू जाति इतने दिनों तक क्यों सोती रही और अपने भाइयों के मिलाने में क्यों तत्पर न हुई, परन्तु आज हिन्दू जाति के बच्चे-बच्चे को शुद्धि के गुण मालूम हो गये हैं। सब को भली प्रकार यह मालूम हो गया है कि यदि हम शुद्धि में भाग न लेंगे तो एक दिन रही सही हिन्दू जाति सृष्टि से उड़ जायेगी। राम और कृष्ण के नाम भूमण्डल पर न रहेंगे। जनेऊ और चोटी का चिन्ह संसार से मिट जायेगा। आर्य- सभ्यता का वृक्ष जड़ से कटवाकर फेंक दिया जायेगा। अब हिन्दू लोग सोते से जाग बैठे हैं। उनके हृदय में जाति उन्नति की लगन काम करने लगी है। शुद्धि का प्रश्न उनके जीने मरने का प्रश्न है। शुद्धि का काम छोड़ा और हिन्दू जाति की मृत्यु आई।

पर हमारे मुसलमान भाई रूष्ट हैं। तरह-तरह के इल्ज़ाम लगा रहे हैं और हमारे अदूरदर्शी हिन्दू भाई भी यह कहने लगे हैं कि शुद्धि बन्द हो, क्योंकि मुसलमान नाराज होंगे, परन्तु यह कितनी भूल है। मुसलमान सैकड़ों हिन्दुओं को बलात् मुलसलमान बनाते हैं, उस समय तो हिन्दू कुछ नहीं करते। यदि हिन्दू अपने बिछुड़े भाइयों को गले लगायें तो न्यायशील मुसलमानों को रूष्ट नहीं होना चाहिए। अपना धर्म पसन्द करने के लिए हर एक को स्वतन्त्रता है। और इस स्वतन्त्रता को छीनना पाप है। हम किसी की गर्दन पर तलवार रखकर यह नहीं करते कि 'शुद्ध हो जाओ', परन्तु जो स्वयं शुद्ध होना चाहते हैं, उनको तो रोकना ही महापाप है। कुछ लोग कहते हैं कि मुसलमान लोग शुद्धि से चिढ़कर अधिक गो-हत्या करेंगे। मुसलमानों ने भी यही धमकी दी है, परन्तु हिन्दुओं को 6 मास की राह चलकर साल भर की राह न चलनी चाहिये। प्राचीन काल में जब मुसलमानों ने हिन्दुओं पर आक्रमण किया तो अपनी सेना के आगे गायें खड़ी कर देते थे। वह समझते थे कि हिन्दू तो गायों को बचाने के लिए हम पर हथियार न चलायेंगे और हम हिन्दुओं को मार लेंगे। यही हुआ और हिन्दू जब हार गये तो अन्य गायों को भी न बचा सके। यही चाल मुसलमान लोग अब चल रहे हैं। यह हमारे अनजान भाई इस धमकी में आ जाते हैं। वह यही नहीं सोचते कि ऐसी धमकियों में आकर कब तक दबते जायेंगे। हर बात पर मुसलमान ऐसी धमकी दिया करेंगे। यह गोरक्षा कितने दिन चलेगी। सबसे अच्छा उपाय गौरक्षा का यही है कि शुद्ध होने वालों को शुद्ध करके भविष्य में गौहत्या का बीज ही मिटा दो।

बहुत से कहते हैं कि शुद्धि नई बात है, परन्तु इतिहास देखने से पता चलता है कि जब हिन्दू प्रबल थे तो दूसरे देशवासियों को धर्म में मिला लेते थे। सिकन्दर के साथ बहुत से यूनानी भारतवर्ष में आये। हूण लोग भी बहुत से आये, परन्तु उनकी अलग जाति नहीं मिलती। वे सब हिन्दू ही हो गये। जब हिन्दू जाति गिरने लगी, उस समय इसने दूसरों को मिलाना छोड़ दिया। 1911 की 'मर्दुमशुमारी' की रिपोर्ट में लिखा है कि सौ वर्ष से कम दिन हुए कि बम्बई प्रान्त के उरप और वरप अग्री हिन्दू जो ईसाई हो गये थे, फिर हिन्दू हो गये और इस जिले के कृपाल भण्डारी लोगों को पुर्तगालों ने बतात् ईसाई कर लिया था, परन्तु ये फिर हिन्दू हो गये। बड़ोदा के सुपरिंटेण्डेण्ट ने लिखा है कि तीन सौ वर्ष हुये कुछ लोग मुसलमान हो गये थे, परन्तु वे धीरे-धीरे रामानन्दी और स्वामीनारायण के मत में हो गये। इस प्रकार हिन्दूओं में प्रायश्चित कराके शुद्ध करने का रिवाज नया नहीं है और इस समय तो हिन्दू जाति को बचाने का एक ही मात्र उपाय है-तन-मन-धन से शुद्धि के काम में भाग लिया जाये। प्रत्येक गौ-भक्त और शिखा-सूत्र धारी हिन्दू का कर्तव्य है कि जो जब कभी शुद्ध होना चाहे तो झट ही किसी शुद्धि सभा द्वारा उसको शुद्ध कर लेना चाहिये और जो कुछ धन या शक्ति उसके पास हो, उससे यथासमय शुद्धि की सहायता करनी चाहिए। यदि आपने अभी तक शुद्धि सभा की सहायता नहीं की, तो देर ने लगाइये और तुरन्त ही अपना कर्तव्य पालन कीजिये। जो पैसा आप शुद्धि-सभा को देते हैं, उससे जन्म जन्मान्तर की गौ-सन्तान की रक्षा होती है। सोचो और देर न करों। यह समय है, समय पर चूके और गये।

कुछ लोगों ने आजकल यह कहना आरम्भ किया है कि हम जानते हैं कि शुद्धि अच्छी चीज है। हम यह भी जानते हैं कि हिन्दुओं का अधिकार है कि उनके धर्म में मिलने वालों को मिला लिया जाये, परन्तु इस समय जब कि हिन्दू और मुसलमानों में मेल है, इसलिये शुद्धि को बन्द कर देना चाहिये, नहीं तो हमारे मुसलमान भाई हमसे रूठ जायेंगे। हमको ऐसा कहने वालों की बुद्धि पर हंसी आती है। यदि यह मानते हो कि हिन्दुओं को अपने धर्म में मिला लेने का उसी प्रकार अधिकार है जैसे मुसलमानों को, तो मेल के समय इस अधिकार को काम में लाने में क्या हानि! हमने मेल तो इसीलिए किया है कि हमारे अधिकार सुरक्षित रहें। यदि मेल के समय भी अधिकार पद-दलित किये गये तो ऐसे मेल से लड़ाई भली। मेल इसीलिए किया जाता है कि परस्पर एक दूसरे के अधिकारों की रक्षा हो। यदि हमने इस समय शुद्धि का काम छोड़ दिया तो कब करेंगे। क्या हिन्दुओं को शुद्धि का काम शुरू करने के लिये उस समय का इन्तजार करना चाहिए, जब हिन्दू मुसलमान भाइयों में लड़ाई का समय आ जाये। यदि हमारे मुसलमान भाइयों में न्याय है तो उनको बुरा नहीं मानना चाहिये, क्योंकि जिनकी शुद्धि की जा रही है वह हिन्दू ही हैं और अपने भाइयों में मिलना चाहते हैं।

कुछ मुसलमान भाई कहते हैं कि यदि किसी एक परिवार के चार आदमी शुद्धि के लिए तैयार हुए और एक न हुआ तो बेचारे पर बड़ा अन्याय होगा, परन्तु वह यह नहीं जानते कि आज तक लाखों और करोड़ों हिन्दुओं को मुसलमान कर लिया गया, उस समय यह दलील कहां गई थी। आज सैकड़ों लोग अपने मां-बाप को छोड़कर ईसाई मुसलमान हो जाते हैं, फिर लोग इनको क्यों दोष नहीं देते। मुसलमान प्रचारकों को क्यों नहीं बन्द कर दिया जाता।

बात यह है कि इस समय हिन्दू जाति में जीवन के चिन्ह पैदा हुये हैं। लोहा इण्डा हो गया तो उसको पीटने से क्या बनेगा। अभी समय है। शीघ्रता कीजिए और शुद्धि सभा में भाग लिजिए।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि मुसलमान हमारे हिन्दू भाइयों को मुसलमान बनाने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। इसन निजामी ने लिखा है कि जो मुसलमान दस हिन्दुओं को मुसलमान नहीं बनाता, वह सच्चा मुसलमान नहीं है। हमारे हिन्दू भाइयों को भी इससे उचित शिक्षा लेनी चाहिए और जहां कोई मुसलमान शुद्ध होना चाहे, उसको फौरन शुद्ध कर लेना चाहिए। साथ ही यह भी प्रयत्न करना चाहिए कि हमारे भाई मुसलमानों के फंदे में न पड़ जायें। जो हिन्दू मुसलमान हो रहा हो, उसे समझाना चाहिये।

नगर-नगर में हिन्दू सभाओं का खुल जाना आवश्यक है। बिना संगठन किये हममें शक्ति नहीं आ सकती। हिन्दुओं को चाहिये कि आपस में प्रीतिपूर्वक व्यवहार करें और अपने धर्म की रक्षा करें।

गांधी जी को भिक्षा

कवीन्द्र और रवीन्द्र नाथ टैगोर बड़े ही बिनोदी थे। वैसे भी वे काम करने में बहुत तेज थे। इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि एक बार वह गम्भीर रूप से बीमार हो गये। डाक्टर ने उन्हें पूरी तरह आराम करने की हिदायत दी यह सन् १९६६ की घटना है। डाक्टर की हिदायत के बाद भी रवीन्द्र नाथ अपना पूरा काम करते थे। शान्ति निकेतन के सभी लोगों ने उन्हें समझाया कि वह पूरा–पूरा आराम करें, मगर उन्होंने किसी की भी एक नहीं सुनी। वे लगातार अपना काम करते रहे। फलस्वरूप बीमारी से छुटकारा नहीं पा रहे थे। हारकर उन्हें सारी बात बतायी गई। गांधी जी नेभी रवीन्द्र नाथ को काफी समझाया पर वे नहीं माने। तब गांधी जी ने उनसे कहा "गुरू देव! आप मुझे भिक्षा दीजिए।"

रवीन्द्र नाथ बोले–" जो खुद भिखारी हो, वह भला किसी को क्या भिक्षा दे सकता है।"

"नहीं आपको मुझे भिक्षा देनी होगी।" गांधी जी बोले। "अच्छा बोलो क्या चाहिए?" रवीन्द्र जी ने पूछा। "पहले आपवचन दीजिए।" गांधी जी ने कहा। रवीन्द्र नाथ ने कहा–"ठीक है मैं वचन देता हूं।"

गांधी जी ने कहा–" तो आप कर से कम भोजन करने के बाद एक घण्टा आराम अवश्य करेंगे।" रवीन्द्र नाथ जी को गांधी जी की यह बात माननी पड़ी।

जब एक दिन रात को रवीन्द्र नाथ भोजन करने के बाद आराम कर रहे थे, तभी आचार्य क्षितिमोहन सेन उनसे मिलने आये। कमरे का दरवाजा बन्द था। पर रवीन्द्रनाथ ने दराज से झांकर कर उन्हें देख लिया और पहचान भी लिया और आवाज दी–" क्या ठाकुर दादा हैं?"

क्षितिमोहन बोले–"हां, लेकिन आप अन्दर क्या कर रहे है?" दादा! मैं गांधी जी को भिक्षा दे रहा हूं। रवीन्द्र नाथ जी बोलें।

अन्तरिक्ष का अध्येता बालक

एक बालक उसका मन पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लगता था। पुस्तकों को तो वह देखता तक नहीं था। एक दिन अध्यापक ने अगले दिन पाठ याद करके लाने को कहा। वह पाठ याद करके न आया। अध्यापक के पूछे जाने पर वह उत्तर न दे सका। पूरी कक्षा के विद्यार्थी हंस दिए। अध्यापक के चले जाने पर सह–पाठियों ने उसका खूब मजाक उड़ाया। एक विद्यार्थी ने तो उसके पेट पर लात भी मार दी।

घर लौटने पर वह बालक खूब रोया–उसे स्वयं पर बड़ा गुस्सा आया। उसी क्षण उसने दृढ़ निश्चय किया। कि वह कक्षा में सर्वाधिक अंक लायेगा। उसने दिन–रात एक कर दिया। वह पुस्तकें जिन्हें देखना तक नहीं चाहता था, अब सदा उसके साथ रहने लगीं। उसे इस परिश्रम का परिणाम शीघ्र ही मिल गया। उसने कक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त किये।

वह हमेशा पवन चक्कियों को देखा करता था। उसने भी एक हवा से चलने वाली चक्की बनाने का निश्चय किया। आरी और पेंचकस तो उसके साथी थे। इन्हें हमेशा अपने साथ रखा करता था। इनसे वह जोड़–तोड़ में लगा रहता था। पवन चक्कियां बनाते समय उसने अनुभव किया कि इसे तो हवा की दिखा पर निर्भर रहना पड़ता है। उसने ऐसी चक्की बनाने का निश्चय किया जो हवा पर निर्भर न हो। उसने कार्य प्रारम्भ कर दिया। जहां चक्की के पहिये थे वहां उसने अन्न के दाने डालकर उन पर कुछ चूहे छोड़ दिये। चूहे अन्न के दाने खाने के लिए दौड़ते, इससे पहिये घूमते और चक्की चलने लगती। हवा पर निर्भर न करने वाली चक्की बनाकर सबको आश्चर्य चकित कर दिया।

उसने सूर्य की गति का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि प्रतिदिन सूर्य की किरण एक निशचित स्थान पर पड़ती है। उस प्रकार उसने धूप घड़ी बनाई। यह होनहार बालक था न्यूटन। जन्म के साथ–साथ कष्ट उसके जीवन से जुड गये थे। न्यूटन के जन्म के दो सप्ताह पूर्व ही उसके पिता की मृत्यु हे गयी थी। उसका पालन–पोषण उसकी दारी मां ने किया था। उसकी मां दूसरी शादी करके उसे छोड़कर चली गयी थी। पढ़ाई के लिए उसे दूर भेजा गया था उसने एक दूकानदार के पास रहकर पढ़ाई की। इतना कष्टप्रद जीवन गुजारने के बाद भी इसकी नई–नई खोजें की। आज अन्तरिक्षयान की उड़ानों में गुरूत्वार्कषण के सिद्धान्त का बहुत महत्व है। न्यूटन ने ही गुरूत्वाकर्षण के नियम स्थापित किये थे। न्यूटन का जन्म जिस करमे में हुआ था, वहां प्रसिद्ध कवि पोप की पंक्तियां लिखी हुई हैं–

"प्रकृति और प्रकृति के नियम रात में छिपे रह जाते हैं। इसलिए ईश्वर ने कहा–न्यूटन का जन्म हो। न्यूटन का जन्म हुआ और चारों ओर प्रकाश हो गया।

''ईश्वर का ध्यान वा सन्ध्या क्यों करे?''

– मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

इस संसार को एक अपौरूषेय सत्ता ने बनाया है। उस सत्ता का नाम ईश्वर है। अपौरूषेय सत्ता मनुष्य से भिन्न वह सत्ता होती है जो मनुष्य के हित का वह काम करती है जिसे कि मनुष्य नहीं कर सकते। हमारे सामने सूर्य, चन्द्र व पृथिवी की सत्तायें हैं। यह सभी सत्तायें जड़ अर्थात् ज्ञान व सम्वेदना से शून्य हैं। जड़ पदार्थ वह होते हैं जो स्वयं बुद्धि व ज्ञानपूर्वक स्वयं संयोग कर किसी नये उपयोगी पदार्थ को नहीं बना सकते। हम जानते हैं कि यदि हमारे पास रोटी बनाने के आटा, गैस चूल्हा आदि सभी पदार्थ हों और उन्हें हम एक स्थान पर रख दें तो बिना किसी मनुष्य के बनाये उनसे रोटी नहीं बन सकती। अब यदि एक रोटी बनाने का जानकार व्यक्ति, स्त्री या पुरूष वहां हो और वह रोट बनाने की चेष्टा करे तो तभी रोटी बनती है। इसी प्रकार से यह संसार भी जड़ पदार्थ प्रकृति के सूक्ष्म परमाणुओं से बना है। यह विभाज्य परमाणु व उन परमाणुओं से बने सूय, चन्द्र, पृथिवी आदि पदार्थ स्वमेव नहीं बने अपितु उन्हें एक चेतन, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वान्तर्यामी एवं सर्वशक्तिमान स्वरूपवाली सत्ता ने बनाय है। इस अपौरूषेय सत्ता को ही ईश्वर ही कहते हैं। इस ईश्वर ने इस सृष्टि व इस पर विद्यमान सभी प्राणियों के शरीरों को भी बनाया है। इसका यह तात्पर्य है कि हमारा जन्म ईश्वर की ज्ञान व कर्म शक्ति के आधार पर हुआ है। यदि उसने हमें जन्म न दिया होता तो यह तो नहीं हो सकता था क्योंकि ऐसा करना मनुष्यों की शक्ति वा सामर्थ्य में नहीं है और स्वतः यह कार्य हो नहीं सकता था। ईश्वर अर्थात् परमात्मा की इस कृपा व ऋण के लिए हममें उसका स्मरण व ध्यान व धन्यवाद करना है जिससे हम कृतघ्नता के पाप से बच सकें और अपना यह जीवन सुखपूर्वक व्यतीत कर सकें। इसके साथ परजन्म में भी हमारा जन्म अच्छी योनि में हो और हम सुखी जीवन व्यतीत करें इसलिए हमें ईश्वर आज्ञानुसार सन्ध्या आदि को करना व उसके ज्ञान वेदों का स्वाध्याय कर अपने कर्तव्यों को निर्धारित करना है।

मनुष्य सन्ध्या वा उपासना क्यों करता है, इसका उत्तर यही है कि हम ईश्वर के कृतज्ञ हैं और उसका धन्यवाद करने के लिए हमें उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना करनी है। इस पूरी प्रक्रिया को सन्ध्या कहा जाता है। इसका अर्थ होता कि ईश्वर का भलीभांति ध्यान करना। सन्ध्या की विधि क्या हो, इसके लिए ऋषि दयानन्द ने सन्ध्या की सर्वोत्तम पद्धति लिखी है जिसे उन्होंने वेदों के अध्ययन व ज्ञान के अनुरूप तैयार किया गया है। यह ज्ञातव्य है कि वेद ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है जिसका सभी को अध्ययन व मनन कर अपने कर्तव्यों का निर्धारण व उपदेश करना है। ईश्वर के ध्यान की विधि ऐसी होनी चाहिये जिससे हम उसका सान्निध्य प्राप्त कर अपने कर्तव्यों का निर्धारण व उपदेश करना है। यह ज्ञातव्य है कि वेद ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है जिसका सभी को अध्ययन व मनन कर अपने कर्तव्यों का निर्धारण व उपदेश करना है। ईश्वर के ध्यान की विधि ऐसी होनी चाहिए जिससे हम उसका सान्निध्य प्राप्त कर अपने कर्तव्यों का निर्धारण व उपदेश करना है। ईश्वर के ध्यान की विधि ऐसी होनी चाहिए जिससे हम उसका सान्निध्य प्राप्त कर अपने दुर्गुण, दुर्व्यस्न व दुःखों को दूर कर सके और उससे कल्याणकारक गुण, कर्म व स्वभाव को प्राप्त होकर सुखी हो सकें। इसका विधान यही है कि हम एक स्थिर आसन में बैठे जिसमें अधिक देर तक सुखपूर्वक बैठ सकें अर्थात् जिसमें हमें कोई कष्ट व दुःख न हो। अब हमें करना यह है कि अपने इन्द्रियों को उनके वाह्य विषयों से रोकर अपने मन की एकाग्रता कह सकते हैं जो सांसारिक विषयों से हटकर ईश्वर का ध्यान व चिन्तन करता है। स्तुति के बाद प्रार्थना का स्थान है। ईश्वर से हम वह सब कुछ मांग सकते हैं जिससे कि हमारा कल्याण होता है। बुद्धि व स्वास्थ्य सहित हम ईश्वर से धन, ऐश्वर्य व सुखों की कामना कर सकते हैं। ईश्वर के गुणों का ध्यान करते हुए उसकी स्तुति व प्रार्थना करना ही ईश्वरोपासना विदित होता है। महर्षि दयानन्द ने सन्ध्या करने के लिए वैदिक सन्ध्या नामक एक लघु ग्रन्थ लिखा है। सन्ध्या के आरम्भ में गायत्री मन्त्र से शिखा बन्धन किया जाता है। तात्पर्य यह है हमारी इन्द्रिया वाह्य विषयों से हट कर ईश्वर के ध्यान में संलग्न हो जायें। इसके बाद आचमन किया जाता है। आचमन का मंत्र सन्ध्या करने के तात्पर्य को बताता है। यह मन्त्र है 'ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः।।'' इस मन्त्र का ऋषि दयानन्द ने अर्थ करते हुए लिखा है कि सबका प्रकाशक और सबको आनन्द देने वाला सर्वव्यापक ईश्वर मनोवांछित आनन्द, अर्थात् ऐहिक सुख-समृद्धि के लिए और पूर्णानन्द, अर्थात् मोक्षानन्द की प्राप्ति के लिए हमको कल्याणकारी हो, अर्थात् हमारा कल्याण करे। वहीं परमेश्वर हम पर सुख की सर्वदा, सब ओर से वृष्टि करे।

इस मन्त्र में ईश्वर से कहा गया है कि ईश्वर सबको आनन्द देने वाला है। वह सर्वव्यापक है। वह ईश्वर हमें मनोवांछित आनन्द प्रदान करे अर्थात् हमें सांसारिक सुख-समृद्धि प्रदान करने के साथ पूर्ण आनन्द प्राप्त कराये। पूर्णानन्द मोक्ष के आनन्द को कहते हैं जो प्राप्त होने पर मनुष्य जन्म व मरण के बन्धन व कष्टों से बहुत लम्बी अवधि के लिए छूट जाता है और ईश्वर के सान्निध्य में रहकर पूर्ण आनन्द वा अत्यधिक सुख को प्राप्त करता है। इस मन्त्र में हम ईश्वर से कल्याण की प्रार्थना भी करते हैं। प्रार्थना में यह कहा गया है कि परमेश्वर हम पर सर्वदा सब ओर से सुख की वर्षा करे। मनुष्य जीवन में इस निर्विवाद उद्देश्य को पूरा करने के लिए सबको अवश्य सन्ध्या करनी होती है। ऐसा कौन मनुष्य होगा जो इन सुखों का प्राप्त करना नहीं चाहेगा? इन सुखों को प्राप्त करने का क्या अन्य कोई साधन है? इस प्रश्न पर विचार करने पर उत्तर न में मिलता है। अतः ईश्वर की उपासना से ही सभी सुख व आनन्द प्राप्त हो सकते हैं। इसी कारण व उद्देश्य हमें ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना सहित उसका प्रातः व सायं चिन्तन व मनन करते हुए ध्यान करना चाहिए।

सन्ध्या करते हुए हम आचमन मंत्रों के बाद इन्द्रिय स्पर्श, मार्जन, प्राणायाम, अघमर्षण अर्थात् पाप से दूर रहने का चिन्तन, मनसापरिक्रमा, उपस्थान मन्त्रों का पाठ करते हैं। इनके बाद ईश्वर को समर्पण किया जाता है। समर्पण करते हुए ईश्वर से कहा जाता है 'हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयानेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिभवेन्नः।' अर्थात् हे परमेश्वर दयानिधे। आपकी कृपा से जप और उपासना आदि कर्मों को करके हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि को शीघ्र प्राप्त होवें। समर्पण में हम कहते हैं कि दया के भण्डार ईश्वर की कृपा से हमने जो जप व उपासना की है उसके परिणाम से हमको धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की शीघ्रातिशीघ्र प्राप्ति हो। इसका अर्थ यह है कि हम जो भी कर्म करे वह वेद सम्मत हो। वे सम्मत कर्म ही ही धर्म कहे जाते हैं। अर्थ का तात्पर्य है कि हमें जो अर्थ व धन प्राप्त हो वह भी धार्मनुसार कर्मों से ही प्राप्त होना चाहिए। धन की प्राप्ति के लिए हमें कोई अनुचित, अशुभ, पाप व अधर्मयुक्त कर्म नहीं करना है। काम का अर्थ है कि हमारे विचार, इच्छायें व आकांक्षायें सब धर्मानुसार ही होनी चाहिए। ऐसी भावनाओं से युक्त हमारा जीवन हो और हमें जीवन की सम्पूर्ति अर्थात् मृत्यु होने पर मोक्ष प्राप्त हो जिससे हमें जन्म-मरण के बन्धन में न आना पड़े। इसलिए न आना पड़े कि हम गर्भवास की पीड़ा सहित विभिन्न योनियों में जीवनकाल में होने वाले दुःखों से बच सकें। अतः धर्मानुकूल सुखी जीवन और मृत्यु पर मोक्ष प्राप्ति ही सन्ध्या का उद्देश्य व लक्ष्य सिद्ध होता है। मोक्ष पूर्णानन्द को कहते हैं जो कि सभी मनुष्यों का अभीष्ट है। इसकी प्राप्ति के लिए हम अपनी बुद्धि व समार्थ्य के अनुसार नाना प्रकार के कर्म करते हैं। ईश्वर को इस प्रकार समर्पण करने के बाद ईश्वर को नमस्कार पूर्वक विदाई लेते हैं।

हम समझते हैं कि जिन लोगों की बुद्धि पवित्र हैं, जो पक्षपात रहित हैं और जो ईश्वर व आत्मा के स्वरूप को यथार्थरूप में जानते हैं वह अवश्य ही सन्ध्या को मनुष्य जीवन का अत्यावश्यक कर्तव्य स्वीकार करेंगे और जीवन भर सन्ध्योपासना करके सन्ध्या के लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे। इसी में सभी मनुष्यों को कल्याण हैं। सन्ध्योपासना की विधि किसी आर्यसमाज व आर्य प्रकाशक से मंगाई जा सकती हैं। इस चर्चा को यहीं विराम देते हैं।

अन्तरंग अधिवेशन सचूना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ के सभी पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित, सहायुक्त एवं अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक २१ जुलाई २०१८ दिन– रविवार, तद्नु श्रावण कृष्ण द्वितीया को पूर्वाह्न ११.०० बजे से स्थान– आर्य समाज गंज स्टेशन रोड मुरादाबाद में का० प्रधान डॉ० धीरज सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न होगी, जिसमें आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

एजेण्डा एवं विस्तृत विषयों की रूप–रेखा सभी को डाक द्वारा भेज दी गई है। कृपया समय से उपस्थित होकर अधिवेशन को सफल बनाये।

• धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मंत्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के तत्वावधान में

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन

गुरूकुल कांगड़ी हरिद्वार ६,७,८ जुलाई २०१८

उद्घाटन समारोह- ०६ जुलाई सायं ४.०० बजे

मुख्य अतिथि

योग गुरु स्वामी रामदेव

एवं ध्वजारोहण

डॉ० धीरज सिंह आर्य, सभा प्रधान

(आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०) द्वारा सम्पन्न होगा

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती | स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती | स्वामी धर्मानन्द सरस्वती | स्वामी सुमेधानन्द (सांसद) | आचार्य बालकृष्ण | स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती | स्वामी धर्मेश्वरानन्द | स्वामी सर्वदानन्द | स्वामी यतीश्वरानन्द | डॉ० धीरज सिंह

पृष्ठ १ का शेष

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के तत्वावधान में तल्ला रामगढ़ नैनीताल का ....

जितने लोग उ०ख० के आर्य लगाते है यह महात्मा नारायण स्वामी जी की देन है।

नन्ही आदि श्री ने गायत्री मन्त्र और उसके अर्थ को सुना कर सभी आर्य जनों का मन मोह लिया।

तृतीय दिवस– योग संध्या यज्ञ के पश्चात सभा मन्त्री स्वामी जी सभी यजमानों को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। सभा प्रधान डा० धीरज जी ने अपने ओजस्वी भाषण में आर्य समाज के प्रचार प्रसार पर प्रकाश डाला। आज आर्य समाजों में प्रचार प्रसार की बहुत कमी आयी है आज हम पुनः जातिवाद में बंटते जा रहे हैं। आज पुनः हमें जातिवाद को समाप्त करना होगा और रोटी बेटी का सम्बन्ध स्थापित करना होगा। आर्यप्रतिनिधि सभा द्वारा शराब बन्दी पर पुनः आन्दोलन करना है यह उत्तर प्रदेश में ही नहीं उत्तराखण्ड देव भूमि पर भी करना है इस शराब ने हर जगह अपनी जड़े मजबूत कर ली है।

मातायें बहिने दिन भर मजदूरी करके जो पैसा लाती है उसे ये नवयुवक छीन कर गाली गलोज करके शराब पी जाते हैं आज हम सभी को इस जहर से छुटकारा पाना है तो एक बार पुनः देश की आजादी की लड़ाई की तरह शराब से आजादी पाने के लिए सबको मिलकर आन्दोलन करना होगा। यह शराब देश प्रदेश से ही नहीं देश से भी बहिष्कार कर देना चाहिए।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में हल्द्वानी आर्य समाज के मन्त्री डॉ० विनय वेदालंकार जी ने भी अपने प्रवचनों से सभी आर्यजनो का मार्ग दर्शन किया। लगातार चल रहे योग शिविर में पं० प्रभात कुमार शास्त्री, (नवीन गायक) सुरजीत कुमार, पं० हरीश कुमार शास्त्री (लखनऊ), श्रीमती वेदाञ्जली आर्या एवं रामनरायन शास्त्री, जी द्वारा भजनों की प्रस्तुति ने कार्यक्रम में सभी आर्यजनों को भक्तिरस में डुबो दिया सहानपुर से पधारे अतिथि के रूप में विजयपाल आर्य जी वीररस के भजन सुनाए आशा आर्या एवं तेजपाल जी ने सामुहिक भजन सुनाए गौरव शास्त्री जी ने यज्ञ की व्यवस्था संभाली।

चतुर्थ दिवस– योग संध्या यज्ञ के पश्चात स्वामी जी ने सबको अपना आशीर्वाद दिया और सभी आर्यजनों को प्रसन्नता एवं निरोगता की कामना की कार्यक्रम के समापन पर सभा प्रधान जी ने सभी का आभार व्यक्त किया भोजन व्यवस्था श्री अशोक कुमार जी की टीम को धन्यवाद दिया।

भोजन की सामाग्री एकत्र कराने हेतु आर्य रूद्रपुर के श्री डी.पी. यादव, श्री जवाहर लाल तनेजा, सुरेश चन्द्र तनेजा तथा उनके सभी सहयोगियो को आभार व्यक्त किया। सहयोग सदस्य लखनऊ से अजय श्रीवास्तव जी के सहयोग का भी धन्यवाद दिया। लगातार चार दिन से अपनी सेवायें दे रहे सभा कार्यालय (लखनऊ), श्रीकृष्ण मुरारी जी, श्री भुवनचन्द्र पाठक जी, श्री हरीश शास्त्री जी एवं शत्रोहन शर्मा, रिषाल सिंह, को धन्यवाद दिया। विशेष महात्मा नारायण स्वामी आश्रम की देख–रेख कर रहे योगी संदीप मुनि जी का ओम के पट्टे से सम्मान किया और उनके कार्य की प्रशंसा की, श्री भारत कुमार एवं श्री पिंटू आर्य (हापुड़) के सहयोग का भी धन्यवाद किया कि उनके सहयोग से दो नवीन भवनों का निर्माण हुआ। गुरूकुल पूठ गढमुक्तेश्वर से श्री प्रदीप शास्त्री, श्री अनिल आर्य, श्री विजय कुमार भारद्वाज व अन्य कार्यत्ताओं को धन्यवाद दिया। अन्त में सभा प्रधान जी अपने विचार रखते हुए अगले वर्ष यहां आश्रम में टीनसेट लग जायेगा हमेशा योग शिविर में वर्षा के कारण बाधा होती है यह अगले वर्ष समाप्त हो जायेगी ऐसा मेरा संकल्प है सभी आर्यजनों ने प्रसन्नता पूर्वक करतल ध्वनि से स्वागत किया शान्ति पाठ उद्घोष के साथ एक दुसरे का अभिवादन करते हुए कार्यक्रम का समापन हुआ।

योग शिविर में भाग लेने आये जनपदो से आर्य जनों ने भाग लिया–

श्री वीरेन्द्र पवार जी (हरिद्वार), श्री पूरन चन्द्र जी (अल्मोड़ा), श्री नवीन चन्द्र जी, (नैनीताल), श्री चंदन सिंह एठनी (वागेश्वर), श्री दयाकृष्ण कान्डपाल (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ०ख०), श्री दयाकृष्ण शर्मा (तल्ला रामगढ़), श्री रामदेव शास्त्री (टनकपुर चम्पावत), श्री शिवकुमार कौशल (गोण्डा), श्री अजय श्रीवास्तव (लखनऊ), श्री जय प्रकाश भारती जी (गाजीपुर), श्री अम्बरीस आर्य (सम्भल), श्री रामनारायण शास्त्री (बाराबंकी), श्री अजय मलहोत्रा (इलाहाबाद), श्री हरिराम वर्मा (बदायूं), श्री विद्यासागर (मेरठ), श्रीमती कलावती आर्या (गोरखपुर), श्री रामचन्द्र आर्य (सीतापुर), श्री अभय श्रोत्रिय, श्री रमेश आर्य, श्री मयंक आर्य (मुरादाबाद), श्री विजय प्रताप पटेल (कुशीनगर), श्री ओमपाल आर्य, श्री हेत राम सागर (अमरोहा), श्री एस.पी. श्रीवास्तव (सुल्तानपुर), लोकेश कुमार शाहजहांपुर, वेद प्रकाश आर्य (कासगंज), श्री मुरलीधर भारती (बस्ती), श्री पवन कुमार आर्य (नजीबाबाद), श्री विकास आर्य (बिजनौर), श्री ठाकुर सिंह आर्य, श्री छूट्टन सिंह आर्य (हापुड़), श्री रामूरत सिंह (प्रतापगढ़), मुकेश आर्य (मुजफ्फर नगर), श्री विकास कुमार (उन्नाव), श्री आतेष कुमार, जूही आशा रानी आर्य (कानपुर) आदि महानुभावों ने अपने ईष्ट मित्रों सहित योग शिविर में भाग लिया।

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२४४१/५७- १२ एवं १६ जून २०
जि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४/२०१६-१८
एक प्रति ₹ २.००

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्स: ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०९८३७४०२१९२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के तत्वावधान में तल्ला रामगढ़ नैनीताल के चतुर्दिवसीय योग शिविर की झलकियां

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।